



Mr. Raghav Sharma

01 Jul 2020

08:45 AM

Jaipur

Model: Web-MyKundli

Order No: 121806601

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 01/07/2020
दिन _____: बुधवार
जन्म समय _____: 08:45:00 घंटे
इष्ट _____: 07:51:00 घटी
स्थान _____: Jaipur
राज्य _____: Rajasthan
देश _____: India

अक्षांश _____: 26:53:00 उत्तर
रेखांश _____: 75:50:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:26:40 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 08:18:20 घंटे
वेलान्तर _____: -00:03:56 घंटे
साम्पातिक काल _____: 02:56:54 घंटे
सूर्योदय _____: 05:36:35 घंटे
सूर्यास्त _____: 19:24:23 घंटे
दिनमान _____: 13:47:48 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: वर्षा
सूर्य के अंश _____: 15:37:12 मिथुन
लग्न के अंश _____: 25:26:39 कर्क

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: कर्क - चन्द्र
राशि-स्वामी _____: तुला - शुक्र
नक्षत्र-चरण _____: विशाखा - 1
नक्षत्र स्वामी _____: गुरु
योग _____: सिद्ध
करण _____: विष्टि
गण _____: राक्षस
योनि _____: व्याघ्र
नाड़ी _____: अन्त्य
वर्ण _____: शूद्र
वश्य _____: मानव
वर्ग _____: सर्प
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: वायु
जन्म नामाक्षर _____: ती-तीरथ
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: लौह - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: कर्क

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

| कैलेंडर | वर्ष | मास | तिथि/प्रविष्टे |
|------------|---------------|--------|----------------|
| राष्ट्रीय | शक : 1942 | आषाढ़ | 10 |
| पंजाबी | संवत : 2077 | आषाढ़ | 18 |
| बंगाली | सन् : 1427 | आषाढ़ | 17 |
| तमिल | संवत : 2077 | आनी | 17 |
| केरल | कोल्लम : 1195 | मिथुनम | 17 |
| नेपाली | संवत : 2077 | आषाढ़ | 17 |
| चैत्रादि | संवत : 2077 | आषाढ़ | शुक्ल 11 |
| कार्तिकादि | संवत : 2077 | आषाढ़ | शुक्ल 11 |

पंचांग

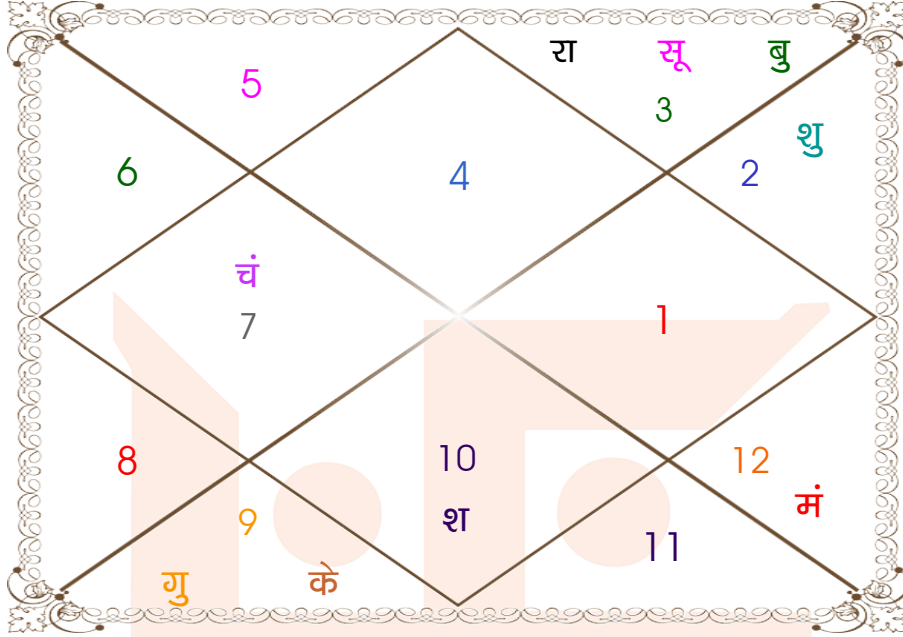
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 11
तिथि समाप्ति काल _____ : 17:29:42
जन्म तिथि _____ : 11
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : विशाखा
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 26:33:55 घंटे
जन्म योग _____ : विशाखा
सूर्योदय कालीन योग _____ : सिद्ध
योग समाप्ति काल _____ : 11:16:28 घंटे
जन्म योग _____ : सिद्ध
सूर्योदय कालीन करण _____ : वणिज
करण समाप्ति काल _____ : 06:39:07 घंटे
जन्म करण _____ : विष्टि
भयात _____ : 11:42:48
भभोग _____ : 56:15:05
भोग्य दशा काल _____ : गुरु 12 वर्ष 7 मा 28 दि

घात चक्र

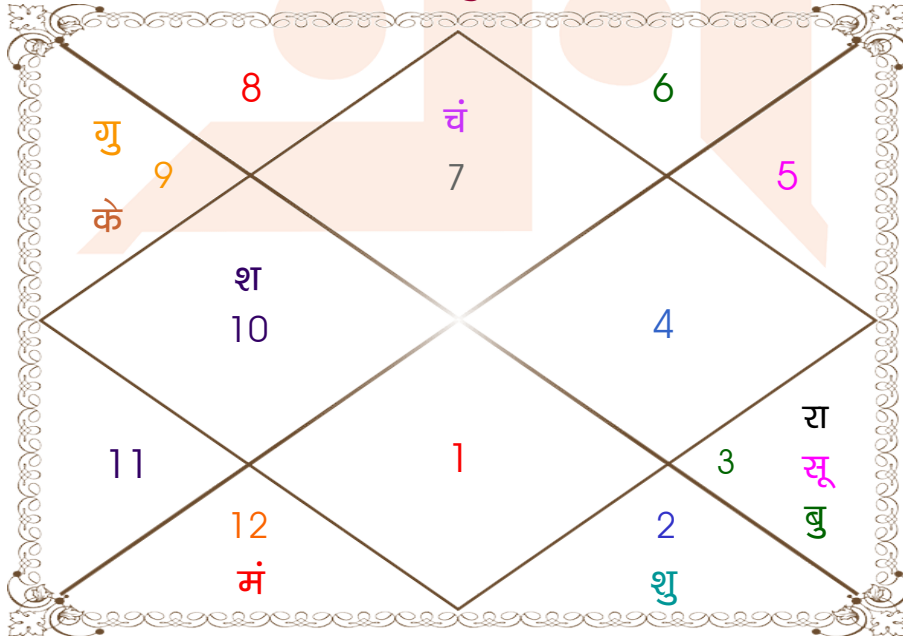
मास _____ : माघ
तिथि _____ : 4-9-14
दिन _____ : गुरुवार
नक्षत्र _____ : शतभिषा
योग _____ : शुक्ल
करण _____ : तैतिल
प्रहर _____ : 4
वर्ग _____ : गरुड़
लग्न _____ : कन्या
सूर्य _____ : कन्या
चन्द्र _____ : धनु
मंगल _____ : तुला
बुध _____ : कर्क
गुरु _____ : वृश्चिक
शुक्र _____ : धनु
शनि _____ : सिंह
राहु _____ : मकर

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुण्डली

| | | |
|----------|----|----------------|
| मं | शु | रा सू बु |
| | | ल |
| श | | |
| के गु | चं | |

लग्न कुण्डली

| | |
|----------------|----------|
| शु | मं |
| रा बु सू | |
| ल | श |
| | गु के |
| चं | |

विंशोत्तरी
गुरु 12वर्ष 7मा 28दि
गुरु

01/07/2020

01/03/2137

| | |
|--------|------------|
| गुरु | 28/02/2033 |
| शनि | 28/02/2052 |
| बुध | 28/02/2069 |
| केतु | 28/02/2076 |
| शुक्र | 28/02/2096 |
| सूर्य | 01/03/2102 |
| चन्द्र | 29/02/2112 |
| मंगल | 01/03/2119 |
| राहु | 01/03/2137 |

योगिनी

धान्या 2वर्ष 4मा 14दि
भामरी

15/11/2022

15/11/2026

| | |
|---------|------------|
| भामरी | 26/04/2023 |
| भद्रिका | 15/11/2023 |
| उल्का | 16/07/2024 |
| सिद्धा | 26/04/2025 |
| संकटा | 16/03/2026 |
| मंगला | 26/04/2026 |
| पिंगला | 16/07/2026 |
| धान्या | 15/11/2026 |

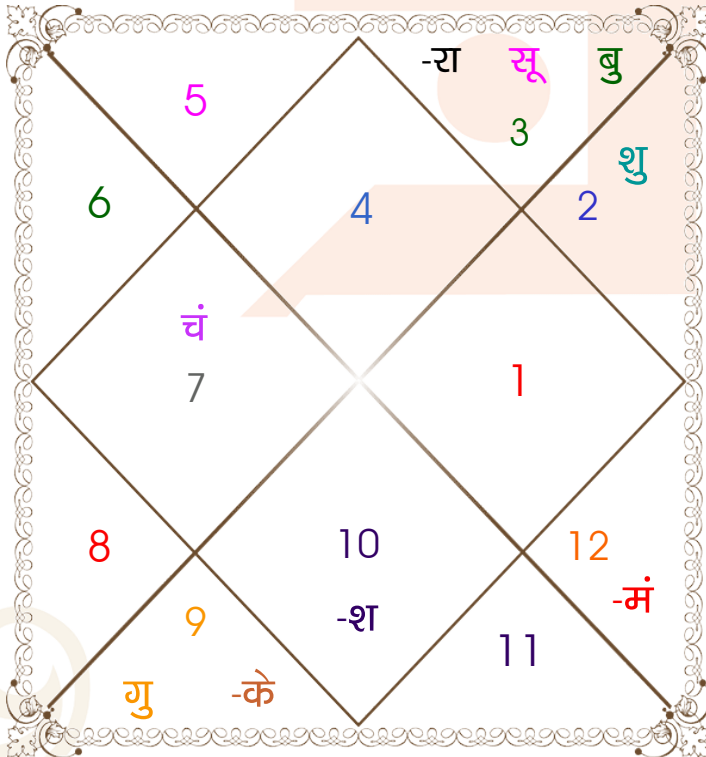
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

| ग्रह | व | अ | राशि | अंश | गति | नक्षत्र | पद | नं. | रा | न | अं. | स्थिति |
|---------|---|---|------|----------|-----------|------------|----|-----|-------|-------|-------|------------|
| लग्न | | | कर्क | 25:26:39 | 312:41:11 | आश्लेषा | 3 | 9 | चंद्र | बुध | राहु | --- |
| सूर्य | | | मिथु | 15:37:12 | 00:57:11 | आर्द्रा | 3 | 6 | बुध | राहु | शुक्र | सम राशि |
| चंद्र | | | तुला | 22:46:55 | 14:14:37 | विशाखा | 1 | 16 | शुक्र | गुरु | शनि | सम राशि |
| मंगल | | | मीन | 07:42:14 | 00:35:49 | उ०भाद्रपद | 2 | 26 | गुरु | शनि | केतु | मित्र राशि |
| बुध | व | अ | मिथु | 15:35:44 | 00:36:07 | आर्द्रा | 3 | 6 | बुध | राहु | शुक्र | स्वराशि |
| गुरु | व | | धनु | 29:51:47 | 00:07:14 | उत्तराषाढा | 1 | 21 | गुरु | सूर्य | राहु | स्वराशि |
| शुक्र | | | वृष | 11:49:52 | 00:12:43 | रोहिणी | 1 | 4 | शुक्र | चंद्र | मंगल | स्वराशि |
| शनि | व | | मक | 05:55:05 | 00:04:00 | उत्तराषाढा | 3 | 21 | शनि | सूर्य | बुध | स्वराशि |
| राहु | | | मिथु | 04:58:17 | 00:01:01 | मृगशिरा | 4 | 5 | बुध | मंगल | सूर्य | उच्च राशि |
| केतु | | | धनु | 04:58:17 | 00:01:01 | मूल | 2 | 19 | गुरु | केतु | मंगल | उच्च राशि |
| हर्ष | | | मेष | 15:43:46 | 00:02:05 | भरणी | 1 | 2 | मंगल | शुक्र | सूर्य | --- |
| नेप | व | | कुंभ | 26:48:15 | 00:00:15 | पू०भाद्रपद | 3 | 25 | शनि | गुरु | शुक्र | --- |
| प्लूटो | व | | धनु | 29:56:59 | 00:01:24 | उत्तराषाढा | 1 | 21 | गुरु | सूर्य | राहु | --- |
| दशम भाव | | | मेष | 22:32:57 | -- | भरणी | -- | 2 | मंगल | शुक्र | शनि | -- |

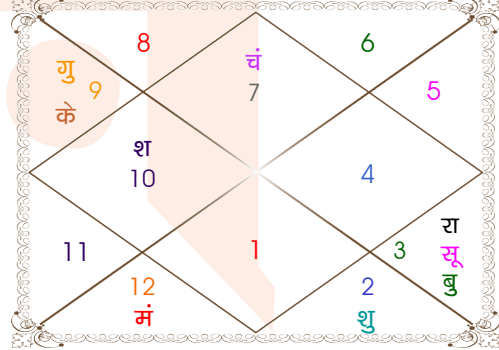
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:08:19

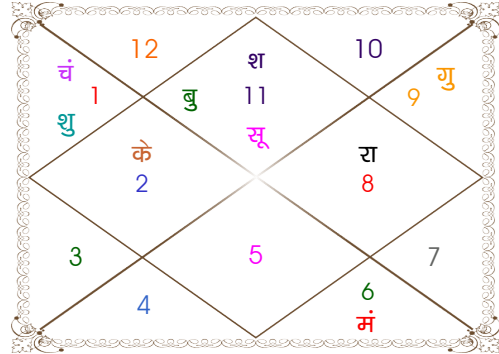
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

| भाव | भाव संधि | भाव मध्य |
|-----|------------------|------------------|
| 1 | कर्क 09:57:42 | कर्क 25:26:39 |
| 2 | सिंह 09:57:42 | सिंह 24:28:45 |
| 3 | कन्या 08:59:48 | कन्या 23:30:51 |
| 4 | तुला 08:01:54 | तुला 22:32:57 |
| 5 | वृश्चिक 08:01:54 | वृश्चिक 23:30:51 |
| 6 | धनु 08:59:48 | धनु 24:28:45 |
| 7 | मकर 09:57:42 | मकर 25:26:39 |
| 8 | कुम्भ 09:57:42 | कुम्भ 24:28:45 |
| 9 | मीन 08:59:48 | मीन 23:30:51 |
| 10 | मेष 08:01:54 | मेष 22:32:57 |
| 11 | वृष 08:01:54 | वृष 23:30:51 |
| 12 | मिथुन 08:59:48 | मिथुन 24:28:45 |

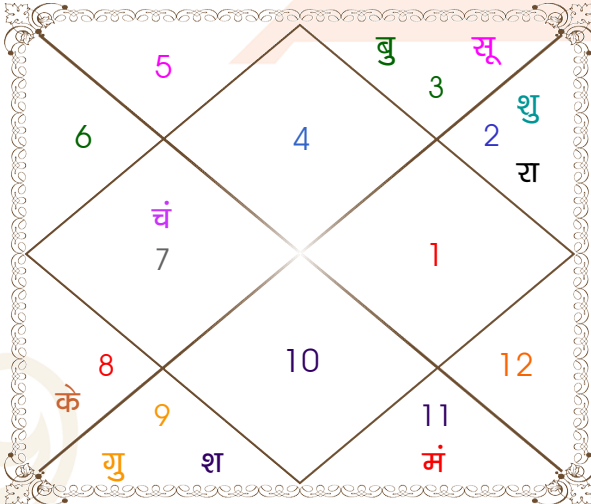
निरयण भाव चलित

| भाव | राशि | अंश |
|-----|---------|----------|
| 1 | कर्क | 25:26:39 |
| 2 | सिंह | 20:53:54 |
| 3 | कन्या | 20:15:53 |
| 4 | तुला | 22:32:57 |
| 5 | वृश्चिक | 25:09:48 |
| 6 | धनु | 26:15:16 |
| 7 | मकर | 25:26:39 |
| 8 | कुम्भ | 20:53:54 |
| 9 | मीन | 20:15:53 |
| 10 | मेष | 22:32:57 |
| 11 | वृष | 25:09:48 |
| 12 | मिथुन | 26:15:16 |

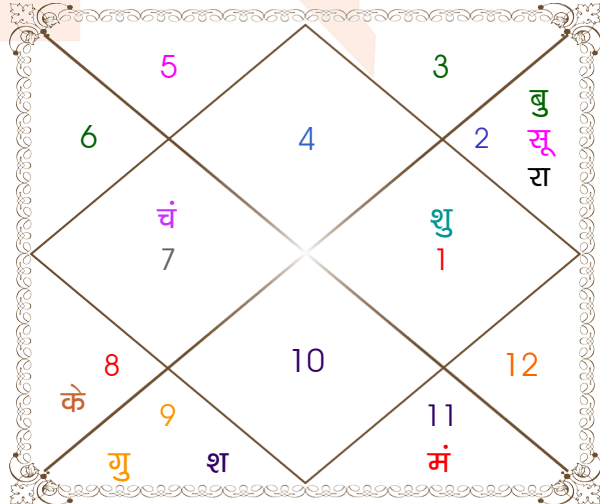
तारा चक्र

| जन्म | सम्पत् | विपत् | क्षेम | प्रत्यारि | साधक | वध | मित्र | अतिमित्र |
|------------|-----------|----------|---------|-------------|------------|--------|---------|----------|
| विशाखा | अनुराधा | ज्येष्ठा | मूल | पूर्वाषाढा | उत्तराषाढा | श्रवण | धनिष्ठा | शतभिषा |
| पू०भाद्रपद | उ०भाद्रपद | रेवती | अश्विनी | भरणी | कृतिका | रोहिणी | मृगशिरा | आर्द्रा |
| पुनर्वसु | पुष्य | आश्लेषा | मघा | पू०फाल्गुनी | उ०फाल्गुनी | हस्त | चित्रा | स्वाति |

चलित कुंडली



भाव कुंडली



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : गुरु 12 वर्ष 7 मास 28 दिन

| गुरु 16 वर्ष | शनि 19 वर्ष | बुध 17 वर्ष | केतु 7 वर्ष | शुक्र 20 वर्ष |
|------------------|------------------|------------------|------------------|------------------|
| 01/07/2020 | 28/02/2033 | 28/02/2052 | 28/02/2069 | 28/02/2076 |
| 28/02/2033 | 28/02/2052 | 28/02/2069 | 28/02/2076 | 28/02/2096 |
| 01/07/2020 | शनि 02/03/2036 | बुध 27/07/2054 | केतु 27/07/2069 | शुक्र 30/06/2079 |
| शनि 29/10/2021 | बुध 10/11/2038 | केतु 24/07/2055 | शुक्र 26/09/2070 | सूर्य 29/06/2080 |
| बुध 04/02/2024 | केतु 20/12/2039 | शुक्र 24/05/2058 | सूर्य 01/02/2071 | चंद्र 28/02/2082 |
| केतु 10/01/2025 | शुक्र 19/02/2043 | सूर्य 31/03/2059 | चंद्र 02/09/2071 | मंगल 30/04/2083 |
| शुक्र 11/09/2027 | सूर्य 01/02/2044 | चंद्र 29/08/2060 | मंगल 29/01/2072 | राहु 30/04/2086 |
| सूर्य 29/06/2028 | चंद्र 01/09/2045 | मंगल 26/08/2061 | राहु 15/02/2073 | गुरु 29/12/2088 |
| चंद्र 29/10/2029 | मंगल 11/10/2046 | राहु 15/03/2064 | गुरु 22/01/2074 | शनि 28/02/2092 |
| मंगल 05/10/2030 | राहु 17/08/2049 | गुरु 20/06/2066 | शनि 03/03/2075 | बुध 29/12/2094 |
| राहु 28/02/2033 | गुरु 28/02/2052 | शनि 28/02/2069 | बुध 28/02/2076 | केतु 28/02/2096 |

| सूर्य 6 वर्ष | चंद्र 10 वर्ष | मंगल 7 वर्ष | राहु 18 वर्ष | गुरु 16 वर्ष |
|------------------|------------------|------------------|------------------|-----------------|
| 28/02/2096 | 01/03/2102 | 29/02/2112 | 01/03/2119 | 01/03/2137 |
| 01/03/2102 | 29/02/2112 | 01/03/2119 | 01/03/2137 | 00/00/0000 |
| सूर्य 17/06/2096 | चंद्र 30/12/2102 | मंगल 27/07/2112 | राहु 11/11/2121 | गुरु 19/04/2139 |
| चंद्र 17/12/2096 | मंगल 31/07/2103 | राहु 15/08/2113 | गुरु 06/04/2124 | शनि 02/07/2140 |
| मंगल 23/04/2097 | राहु 29/01/2105 | गुरु 22/07/2114 | शनि 11/02/2127 | 00/00/0000 |
| राहु 18/03/2098 | गुरु 31/05/2106 | शनि 31/08/2115 | बुध 30/08/2129 | 00/00/0000 |
| गुरु 04/01/2099 | शनि 30/12/2107 | बुध 27/08/2116 | केतु 18/09/2130 | 00/00/0000 |
| शनि 17/12/2099 | बुध 31/05/2109 | केतु 23/01/2117 | शुक्र 17/09/2133 | 00/00/0000 |
| बुध 24/10/2100 | केतु 30/12/2109 | शुक्र 25/03/2118 | सूर्य 12/08/2134 | 00/00/0000 |
| केतु 01/03/2101 | शुक्र 31/08/2111 | सूर्य 31/07/2118 | चंद्र 11/02/2136 | 00/00/0000 |
| शुक्र 01/03/2102 | सूर्य 29/02/2112 | चंद्र 01/03/2119 | मंगल 01/03/2137 | 00/00/0000 |

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल गुरु 12 वर्ष 8 मा 1 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

| गुरु - शुक्र | गुरु - सूर्य | गुरु - चंद्र | गुरु - मंगल | गुरु - राहु |
|------------------|------------------|------------------|------------------|------------------|
| 10/01/2025 | 11/09/2027 | 29/06/2028 | 29/10/2029 | 05/10/2030 |
| 11/09/2027 | 29/06/2028 | 29/10/2029 | 05/10/2030 | 28/02/2033 |
| शुक्र 21/06/2025 | सूर्य 25/09/2027 | चंद्र 09/08/2028 | मंगल 18/11/2029 | राहु 13/02/2031 |
| सूर्य 09/08/2025 | चंद्र 20/10/2027 | मंगल 06/09/2028 | राहु 08/01/2030 | गुरु 10/06/2031 |
| चंद्र 29/10/2025 | मंगल 06/11/2027 | राहु 18/11/2028 | गुरु 23/02/2030 | शनि 27/10/2031 |
| मंगल 25/12/2025 | राहु 20/12/2027 | गुरु 22/01/2029 | शनि 18/04/2030 | बुध 28/02/2032 |
| राहु 20/05/2026 | गुरु 28/01/2028 | शनि 09/04/2029 | बुध 05/06/2030 | केतु 19/04/2032 |
| गुरु 27/09/2026 | शनि 14/03/2028 | बुध 17/06/2029 | केतु 25/06/2030 | शुक्र 13/09/2032 |
| शनि 28/02/2027 | बुध 24/04/2028 | केतु 16/07/2029 | शुक्र 21/08/2030 | सूर्य 26/10/2032 |
| बुध 16/07/2027 | केतु 11/05/2028 | शुक्र 05/10/2029 | सूर्य 07/09/2030 | चंद्र 07/01/2033 |
| केतु 11/09/2027 | शुक्र 29/06/2028 | सूर्य 29/10/2029 | चंद्र 05/10/2030 | मंगल 28/02/2033 |
| शनि - शनि | शनि - बुध | शनि - केतु | शनि - शुक्र | शनि - सूर्य |
| 28/02/2033 | 02/03/2036 | 10/11/2038 | 20/12/2039 | 19/02/2043 |
| 02/03/2036 | 10/11/2038 | 20/12/2039 | 19/02/2043 | 01/02/2044 |
| शनि 21/08/2033 | बुध 20/07/2036 | केतु 04/12/2038 | शुक्र 30/06/2040 | सूर्य 08/03/2043 |
| बुध 23/01/2034 | केतु 15/09/2036 | शुक्र 10/02/2039 | सूर्य 27/08/2040 | चंद्र 06/04/2043 |
| केतु 28/03/2034 | शुक्र 26/02/2037 | सूर्य 02/03/2039 | चंद्र 01/12/2040 | मंगल 26/04/2043 |
| शुक्र 27/09/2034 | सूर्य 16/04/2037 | चंद्र 05/04/2039 | मंगल 07/02/2041 | राहु 17/06/2043 |
| सूर्य 21/11/2034 | चंद्र 07/07/2037 | मंगल 28/04/2039 | राहु 30/07/2041 | गुरु 03/08/2043 |
| चंद्र 21/02/2035 | मंगल 02/09/2037 | राहु 28/06/2039 | गुरु 31/12/2041 | शनि 27/09/2043 |
| मंगल 26/04/2035 | राहु 28/01/2038 | गुरु 21/08/2039 | शनि 03/07/2042 | बुध 15/11/2043 |
| राहु 08/10/2035 | गुरु 08/06/2038 | शनि 24/10/2039 | बुध 13/12/2042 | केतु 05/12/2043 |
| गुरु 02/03/2036 | शनि 10/11/2038 | बुध 20/12/2039 | केतु 19/02/2043 | शुक्र 01/02/2044 |
| शनि - चंद्र | शनि - मंगल | शनि - राहु | शनि - गुरु | बुध - बुध |
| 01/02/2044 | 01/09/2045 | 11/10/2046 | 17/08/2049 | 28/02/2052 |
| 01/09/2045 | 11/10/2046 | 17/08/2049 | 28/02/2052 | 27/07/2054 |
| चंद्र 20/03/2044 | मंगल 25/09/2045 | राहु 16/03/2047 | गुरु 18/12/2049 | बुध 02/07/2052 |
| मंगल 23/04/2044 | राहु 25/11/2045 | गुरु 02/08/2047 | शनि 14/05/2050 | केतु 22/08/2052 |
| राहु 19/07/2044 | गुरु 18/01/2046 | शनि 14/01/2048 | बुध 22/09/2050 | शुक्र 16/01/2053 |
| गुरु 04/10/2044 | शनि 23/03/2046 | बुध 09/06/2048 | केतु 15/11/2050 | सूर्य 01/03/2053 |
| शनि 03/01/2045 | बुध 19/05/2046 | केतु 09/08/2048 | शुक्र 18/04/2051 | चंद्र 13/05/2053 |
| बुध 26/03/2045 | केतु 12/06/2046 | शुक्र 29/01/2049 | सूर्य 03/06/2051 | मंगल 03/07/2053 |
| केतु 29/04/2045 | शुक्र 18/08/2046 | सूर्य 23/03/2049 | चंद्र 20/08/2051 | राहु 12/11/2053 |
| शुक्र 03/08/2045 | सूर्य 07/09/2046 | चंद्र 17/06/2049 | मंगल 13/10/2051 | गुरु 10/03/2054 |
| सूर्य 01/09/2045 | चंद्र 11/10/2046 | मंगल 17/08/2049 | राहु 28/02/2052 | शनि 27/07/2054 |

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

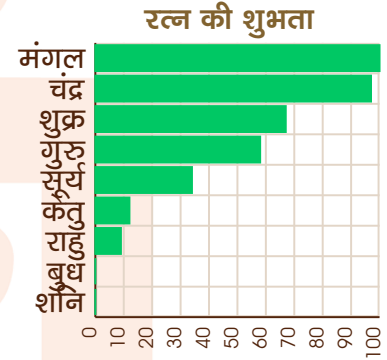
| | |
|--------------|-----------------------|
| मूलांक | 1 |
| भाग्यांक | 3 |
| मित्र अंक | 1, 4, 8, 9, 3 |
| शत्रु अंक | 5, 6 |
| शुभ वर्ष | 19,28,37,46,55 |
| शुभ दिन | मंगल, सोम, गुरु |
| शुभ ग्रह | मंगल, चन्द्र, गुरु |
| मित्र राशि | मकर, मिथुन |
| मित्र लग्न | तुला, मीन, वृष |
| अनुकूल देवता | लक्ष्मी |
| शुभ रत्न | मोती |
| शुभ उपरत्न | चन्द्रमणि |
| भाग्य रत्न | पुखराज |
| शुभ धातु | रजत |
| शुभ रंग | श्वेत |
| शुभ दिशा | पश्चिमोत्तर |
| शुभ समय | संध्या |
| दान पदार्थ | शंख, कपूर, श्वेतचन्दन |
| दान अन्न | चावल |
| दान द्रव्य | दही |

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

| रत्न | ग्रह | शुभता | क्षेत्र |
|----------|-------|-------|---|
| मूंगा | मंगल | 100% | भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख |
| मोती | चंद्र | 97% | सुख, स्वास्थ्य |
| हीरा | शुक्र | 67% | धनार्जन, सुख |
| पुखराज | गुरु | 58% | शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय |
| माणिक्य | सूर्य | 34% | व्यय, धन हानि |
| लहसुनिया | केतु | 12% | शत्रु व रोग |
| गोमेद | राहु | 9% | व्यय |
| पन्ना | बुध | 0% | व्यय, पराक्रम हानि |
| नीलम | शनि | 0% | दाम्पत्य कष्ट, दुर्घटना |



दशानुसार रत्न विचार

| दशा | समाप्ति | माणिक्य | मोती | मूंगा | पन्ना | पुखराज | हीरा | नीलम | गोमेद | लहसुनिया |
|-------|------------|---------|------|-------|-------|--------|------|------|-------|----------|
| गुरु | 28/02/2033 | 47% | 100% | 100% | 0% | 70% | 54% | 0% | 9% | 12% |
| शनि | 28/02/2052 | 9% | 84% | 95% | 0% | 58% | 73% | 21% | 22% | 0% |
| बुध | 28/02/2069 | 47% | 84% | 100% | 6% | 58% | 73% | 0% | 9% | 12% |
| केतु | 28/02/2076 | 9% | 84% | 100% | 0% | 58% | 73% | 0% | 0% | 38% |
| शुक्र | 28/02/2096 | 9% | 84% | 100% | 0% | 58% | 79% | 9% | 22% | 25% |
| सूर्य | 01/03/2102 | 55% | 100% | 100% | 0% | 64% | 54% | 0% | 0% | 0% |
| चंद्र | 29/02/2112 | 47% | 100% | 100% | 0% | 58% | 67% | 0% | 0% | 0% |
| मंगल | 01/03/2119 | 47% | 100% | 100% | 0% | 64% | 67% | 0% | 0% | 25% |
| राहु | 01/03/2137 | 9% | 84% | 95% | 0% | 58% | 73% | 9% | 34% | 0% |

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

| | | |
|------------------------|---|-------|
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया | 01/07/2020-29/04/2022 12/07/2022-17/01/2023 | ----- |
| अष्टम स्थानस्थ ढैया | 08/08/2029-05/10/2029 17/04/2030-31/05/2032 | ----- |
| साढ़ेसाती प्रथम ढैया | 22/10/2038-05/04/2039 13/07/2039-28/01/2041 06/02/2041-26/09/2041 | |
| साढ़ेसाती द्वितीय ढैया | 28/01/2041-06/02/2041 26/09/2041-11/12/2043 23/06/2044-30/08/2044 | |
| साढ़ेसाती तृतीय ढैया | 11/12/2043-23/06/2044 30/08/2044-08/12/2046 | ----- |

द्वितीय चक्र:

| | | |
|------------------------|---|-------|
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया | 06/03/2049-10/07/2049 04/12/2049-25/02/2052 | ----- |
| अष्टम स्थानस्थ ढैया | 27/05/2059-11/07/2061 13/02/2062-07/03/2062 | ----- |
| साढ़ेसाती प्रथम ढैया | 30/08/2068-04/11/2070 | ----- |
| साढ़ेसाती द्वितीय ढैया | 04/11/2070-05/02/2073 31/03/2073-23/10/2073 | ----- |
| साढ़ेसाती तृतीय ढैया | 05/02/2073-31/03/2073 23/10/2073-16/01/2076 11/07/2076-11/10/2076 | |

तृतीय चक्र:

| | | |
|------------------------|---|-------|
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया | 15/01/2079-12/04/2081 03/08/2081-07/01/2082 | ----- |
| अष्टम स्थानस्थ ढैया | 18/07/2088-31/10/2088 05/04/2089-19/09/2090 25/10/2090-21/05/2091 | |
| साढ़ेसाती प्रथम ढैया | 11/10/2097-02/05/2098 20/06/2098-26/12/2099 17/03/2100-16/09/2100 | |
| साढ़ेसाती द्वितीय ढैया | 26/12/2099-17/03/2100 16/09/2100-03/12/2102 | ----- |
| साढ़ेसाती तृतीय ढैया | 03/12/2102-29/11/2105 | ----- |

शनि का ढैया फल

| ढैया के प्रकार | फल | क्षेत्र |
|------------------------|-----|-------------|
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया | शुभ | दम्पति |
| अष्टम स्थानस्थ ढैया | शुभ | धनार्जन |
| साढ़ेसाती प्रथम ढैया | शुभ | पराक्रम |
| साढ़ेसाती द्वितीय ढैया | शुभ | सुख |
| साढ़ेसाती तृतीय ढैया | सम | सन्तति कष्ट |

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति नवम भाव में स्थित है। यह भाव भाग्य एवं धर्म का प्रतिनिधि भाव है। अतः इसके प्रभाव से आप भाग्य पर अल्प मात्रा में ही विश्वास करेंगे तथा कर्म पर विशेष ध्यान देंगे। आपके विचार से कर्म के बिना भाग्य का उदय नहीं होता अतः अपने इस सिद्धांत से आप जीवन में कर्म के द्वारा उन्नति मार्ग प्रशस्त करने में सफल रहेंगे। साथ ही धर्म के प्रति आपकी रुचि अल्प मात्रा में रहेगी तथा धार्मिक कार्य कलापों एवं तीर्थ स्थानों की यात्रा आदि को भी कम ही करेंगे। आयु के साथ साथ आप जीवन में इनके महत्व को भी अवश्य स्वीकार करेंगे। आपको समाज में विशिष्ट सम्मान भी प्राप्त होगा लेकिन इसमें विलम्ब हो सकता है। आप एक पराकमी एवं उत्साही व्यक्ति हैं अतः आपको इस ओर से कोई चिन्ता नहीं होगी।

नवम भाव से द्वादश भाव पर मंगल की चतुर्थ दृष्टि के प्रभाव से आपका व्यय अधिक रहेगा साथ ही शुभाशुभ कार्यों पर आप व्यय करेंगे। जमीन जायदाद पर अधिक से अधिक व्यय करने के इच्छुक रहेंगे इससे आपको प्रचुर मात्रा में लाभ की प्राप्ति हो सकती है। यद्यपि इसके प्रभाव से जीवन में अनावश्यक विघ्न बाधाएं भी आएंगी परन्तु उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही दाम्पत्य जीवन का आप सुख पूर्वक उपभोग करेंगे। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि से आपके पराकम में वृद्धि होगी तथा समाज में सभी लोग आपके पराकम से प्रभावित रहेंगे जिससे आपको इच्छित मान सम्मान की प्राप्ति होगी। साथ ही भाई बहनों का भी न्यूनाधिक सहयोग मिलता रहेगा। चतुर्थ भाव पर इसकी दृष्टि के प्रभाव से आप जमीन जायदाद तथा वाहन आदि से युक्त रहेंगे तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। इसके अतिरिक्त अन्य सांसारिक सुख संसाधनों की भी आपको परिश्रम पूर्वक प्राप्ति होगी परन्तु माता का सुख एवं स्वास्थ्य मध्यम रहेगा।

इस प्रकार मंगल के इस प्रभाव से आप कर्म योगी रहेंगे तथा परिश्रम एवं पराक्रम से अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करके भाग्योदय करेंगे। आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा तथा पारिवारिक जन भी आपसे सन्तुष्ट रहेंगे। आप भी उचित रूप से उनका लालन पालन करेंगे। साथ ही आपसी संबंधों में मधुरता भी बनी रहेगी।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में शेषनाग नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक के शरीर में रोग व्याधि कभी लग जाती है, जिसमें नेत्र रोग, उदर रोग, अनिद्रा आदि सम्मिलित हैं। मानसिक उद्विग्नता के कारण दिल और दिमाग थोड़ा बहुत परेशान रहता है और शारीरिक सुख का प्रायः अभाव रहता है।

इस योग के कारण जातक को अपने जन्मस्थान व देश से दूर रहना पड़ता है और बेवजह अनेक शत्रु हो जाते हैं। वे समय-समय पर षड्यन्त्र रचते रहते हैं। परन्तु वे अपने षड्यन्त्र में प्रायः सफल नहीं होते। झगड़ा-झंझट, वाद-विवाद में जातक को हार का सामना करना पड़ता है। जातक को न्यायालय से प्रायः नुकसान ही उठाना पड़ता है। जातक को अपनी जिन्दगी में समय-समय पर बदनाम होने का भय बना रहता है। काम बनते-बनते रह जाते हैं। काम करने का ढंग निराला होता है। कामों को सफल करने के लिए थोड़ा बहुत संघर्ष करना पड़ता है, पर सफलता संदिग्ध रहती है।

इसके प्रभाव से आमदनी से अधिक व्यय होने के कारण आर्थिक संकट घेर लेते हैं। जातक के प्रायः अनेक कर्जदार हो जाते हैं। कर्जा उतारने हेतु किए गए प्रयासों में सफलता मिलती है पर थोड़ा बहुत नुकसान भी उठाना पड़ता है। मनोनुकूल काम पूरा होने में थोड़ा विलम्ब होता है। लेकिन इतना सब कुछ होने के बाद भी जातक के जीवन में एक अच्छा समय आता है और सामाजिक मान-सम्मान भी मिलता है। जीवन के अन्त में या मरणोपरान्त इनका नाम प्रसिद्ध होता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ॐ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अद्वारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ॐ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक

करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।

11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- चन्द्र पर राहु और शनि दोनों का प्रभाव है ।
- पंचम भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है ।
- नवम भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है ।
- लग्नेश शनि व राहु दोनों से प्रभावित है ।

आपकी कुण्डली में चन्द्र, मंगल और गुरु के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी “ॐ नमः शिवाय” का मंत्र जाप करें । दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें । ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें ।

आपकी कुण्डली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ

आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए।

आपकी कुंडली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राहमण और पति को दान दें। विद्यालय में पुस्तकों का दान करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

बारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक वाम नेत्र तथा मस्तक रोगी ,आलसी, उदासीन, परदेशवासी, मित्र-द्वेषी एवं कृश शरीर होता है।

मिथुन राशि में रवि हो तो जातक धनवान्, ज्योतिषी, इतिहास प्रेमी उदार, विवेकी, विद्वान्, बुद्धिमान, मधुरभाषी, नम्र एवं प्रेमी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त ही रहेंगे एवं जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको नित्य अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। दानशीलता की प्रवृत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं आपको भी पुण्य कार्यों को करने की नित्य प्रेरणा प्रदान करते रहेंगे।

आप का भी उनके प्रति मन में पूर्ण आदर का भाव रहेगा एवं समयानुसार उनकी आज्ञा का आप अनुपालन करते रहेंगे। आपके आपसी संबंध अच्छे होंगे परन्तु बीच बीच में कभी सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनाव या कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही आजीवन में हमेशा उनके सहयोग एवं सहायता के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे तथा समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार की वांछित सहयोग भी प्रदान करेंगे।

चन्द्र

चतुर्थभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सुखी, मानी, दानी, उदार, रोगरहित, राजद्वेषवर्जित, कृषक, विवाह के पश्चात् भाग्योदयी, जलजीवी एवं बुद्धिमान होता है।

तुला राशि में चन्द्रमा हो तो जातक दीर्घदेही, आस्तिक, अन्नदाता, धनवान्, जमींदार, कुशाबुद्धिवाला, चतुर, उच्चाकांक्षाओं से रहित, सन्तोषी एवं परोपकारी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति चतुर्थ भाव में होने से माता का शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके प्रति उनका प्रगाढ़ स्नेह रहेगा एवं जीवन में सर्वप्रकार की सुख सुविधाएं तथा अन्य सुखों को वे आपको प्रदान करेंगी। आपके मध्य मतभेद अल्प ही रहेंगे अतः परस्पर संबंध मधुर रहेंगे। साथ ही वाहनादि की प्राप्ति में भी वे आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी तथा कभी भी कोई कठिनाई का सामना नहीं करने देंगी।

आप भी उनका हमेशा हार्दिक सम्मान करेंगे तथा उनकी आज्ञा एवं निर्देशों को मानने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। साथ ही अपने जीवन काल में उनकी श्रद्धापूर्वक सेवा करेंगे तथा आवश्यक सुखसुविधाओं को भी प्रदान करेंगे। इस प्रकार आपके परस्पर संबंध मधुर एवं सुदृढ़ रहेंगे तथा जीवन को प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत करेंगे।

मंगल

नौवें भाव में मंगल हो तो जातक अभिमानी, क्रोधी, नेता, द्वेषी, अल्पलाभ करने वाला, यशस्वी, असन्तुष्ट, भातृविरोधी, अधिकारी एवं ईर्ष्यालु होता है।

मीन राशि में मंगल हो तो जातक गौवरवर्ण, कामुक, आज्ञाकारी गन्दा, अस्थिर जीवन, रोगी, प्रवासी, मान्त्रीक, बन्धु-द्वेषी, नास्तिक, हठी, धूर्त और वाचाल होता है।

आपके जन्म समय में मंगल नवम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा लेकिन यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। आपके प्रति उनका अपनत्व रहेगा एवं जीवन के सुख दुःख में आपका नित्य सहयोग करते रहेंगे। इसके साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी वे वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता अवश्य प्रदान करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा इससे वे युक्त रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से स्नेह एवं सम्मान प्रदान करेंगे एवं सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में उनको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। आपके आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी परन्तु यदा कदा आपसी सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण उनमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अस्थायी रहेगी। इसके साथ ही उनकी भाग्योन्नति में भी आप समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार से अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे एवं सुख दुःख में उनका पूर्ण साथ देंगे।

बुध

बारहवें भाव में बुध हो तो जातक अल्पभाषी, विद्वान्, आलसी धर्मात्मा, वकील, सुन्दर, वेदान्ती, लेखक, दानी एवं शास्त्रज्ञ होता है।

मिथुन राशि में बुध हो तो जातक मधुरभाषी, शास्त्रज्ञ, लब्धप्रतिष्ठ, वक्ता, लेखक, अल्पसन्ततिवाला, विवेकी, सदाचारी, खोज के काम में चतुर, दीर्घायु, यात्रा का शौकीन, संगीत में रुचि एवं हास परिहास करने वाला होता है।

गुरु

षष्ठभाहव में गुरु हो तो जातक विवेकी, प्रसिद्ध, ज्योतिषी, विद्वान् सुकर्मरत, दुर्बल, उदार, प्रतापी, नीरोगी, लोकमान्य, बहुत कमशत्रु एवं मधुरभाषी होता है।

धनु राशि में गुरु हो तो जातक धनी, प्रभावशाली, विद्वान्, विश्वस्त, सज्जन, दानशील संगठनकर्ता, अच्छा वक्ता, धर्माचार्य, दम्भी, रतिप्रेमी एवं धूर्त होता है।

शुक्र

ग्यारहवें भाव में शुक्र हो तो जातक परोपकारी, लोकप्रिय, जौहरी, विलासी,

वाहनसुखी, स्थिरलक्ष्मीवान्, धनवान् गुणज्ञ, कामी एवं पुत्रवान् होता है।

वृष राशि में शुक हो तो जातक सुन्दर, ऐश्वर्यवान्, दानी, सदाचारी, सात्त्विक, परोपकारी, अनेक शास्त्रज्ञ, दृढ़, स्वतन्त्रकामुक, शौकीन तबीयत, संगीत-नृत्य तथा अन्य कलाओं में रुचि एवं आलसी होता है।

शनि

सप्तम भाव में शनि हो तो जातक क्रोधी, कामी, विलासी, अविवाहित रहना या दुःखी विवाहित जीवन, धन सुखहीन, भ्रमणशील, नीचकर्मरत, स्त्रीभक्त एवं आलसी होता है।

मकर राशि में शनि हो तो जातक कुशा बुद्धि, परिश्रमी, आस्तिक भोगी, मिथ्याभाषी, शिल्पकार, प्रवासी, अच्छा घरेलू जीवन, विद्वान्, सन्देह करनेवाला, बदला लेने वाला एवं दार्शनिक होता है।

राहु

बारहवें भाव में राहु हो तो जातक विवेकहीन, कामी, चिन्ताशील, अतिव्ययी, सेवक, परिश्रमी, मूर्ख एवं मतिमन्द होता है।

मिथुन राशि में राहु हो तो जातक- साहसी, दीर्घायु, साधु गाने वाला, योगाभ्यासी एवं बलवान् होता है।

केतु

षष्ठभाव में केतु हो तो जातक वात विकारी, झगड़ालू, अरिष्टनिवारक, सुखी, मितव्ययी, भूत प्रेतजनित रोगों से रोगी, दुर्घटना, दीर्घायु एवं धनी होता है।

धनु राशि में केतु हो तो जातक चंचल, धूर्त एवं मिथ्यावादी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- गुरु
(01/07/2020 - 28/02/2033)

आपकी कुंडली में गुरु की महादशा 01/07/2020 को आरम्भ तथा 28/02/2033 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 16 वर्ष है।

आपकी जन्मकुंडली में गुरु षष्ठ भाव में स्थित है। षष्ठ भाव बीमारी, रोग, कर्मचारी, नौकर, ऋण, शत्रु, मामा, तथा क्रोध का भाव है। गुरु स्वभावतः शुभ ग्रह है जिसकी षष्ठ भाव में स्थिति तथा दशम, द्वादश तथा द्वितीय भाव पर दृष्टि है और इन भावों पर यह शुभ प्रभाव डाल रहा है। सोलह वर्षों की इस दशा में आपको कभी-कभी छोटी समस्या हो सकती है परन्तु कुल मिलाकर आपके लिए समय सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य :

गुरु के रोग, शत्रु तथा ऋण के द्योतक षष्ठ भाव में स्थित होने के फलस्वरूप आपको रोग से मुक्ति मिलेगी। पैर तथा यकृत जनित रोग के प्रति सतर्कता बरतें।

अर्थ-सम्पत्ति :

गुरु की षष्ठ भाव में स्थिति तथा जीविका, खर्च और धन से संबंधित द्वादश, दशम एवं द्वितीय भाव पर इसकी दृष्टि के फलस्वरूप आपको इस दशा-काल में अपने धन की वृद्धि करने का पर्याप्त सुअवसर मिलेगा। आप अपने स्रोतों में वृद्धि करेंगे तथा विलासिता की चीजों पर खर्च करेंगे।

व्यवसाय :

गुरु की दृष्टि दशम भाव (केंद्र तथा कर्म भाव), द्वादश अर्थात् व्यय भाव तथा द्वितीय यानी धन भाव पर होने के कारण आपको अपने कर्म क्षेत्र में ऊपर उठने तथा धन कमाने का सुअवसर प्राप्त होगा। कभी कभार घाटे से बचने के लिए कुछ सावधानी बरतने की आवश्यकता है।

पारिवारिक जीवन :

आपके जीवनसाथी आपका पूर्ण सहयोग करेंगे तथा आपके बच्चे आज्ञाकारी होंगे जिससे आपका पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा।

**अंतर्दशा :- गुरु - शुक्र
(10/01/2025 - 11/09/2027)**

आपके लिए बृहस्पति महादशा 01/07/2020 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में पांचवी अंतर्दशा शुक्र की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 10/01/2025 को प्रारंभ होकर 11/09/2027 के समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, सुख और कला का कारक है।

इस अवधि में आप सफल रहेंगे। किस्मत चमकेगी। धन और सब सुख-साधन उपलब्ध होंगे। लोकप्रियता बढ़ेगी। बड़े भाई-बहनों से संबंध मधुर रहेंगे। समाज में सफलता मिलेगी; जीवन आमोद-प्रमोद में गुजरेगा। धनागम होगा; वाहनसुख संभव है। अगर विवाहित हैं तो शिशु का जन्म हो सकता है। विवाहित जीवन सुखी होगा। शिक्षा उत्तम होगी और प्रगति के अवसर मिलेंगे।

आपके जीवनसाथी के पद और सम्मान में वृद्धि होगी। आपके पिता को सफलता आसानी से मिल जाएगी। माता के जीवन में अचानक कुछ घट सकता है।

आपके भाई-बहनों के लिए धन, सामूहिक कार्यों और परीक्षा में सफलता का संकेत है।

आपकी संतान अगर कार्यरत है तो साझेदारी से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत है तो कार्यालय में वातावरण मधुर रहेगा। परामर्शदाताओं को विभिन्न माध्यमों से लाभ होगा। व्यापारियों का लाभ उत्तम होगा; धनी बनेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। कानों और पैरों में मामूली शिकायत हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र मंत्र का जाप करें।

ॐ शुं शुक्राय नमः

**अंतर्दशा :- गुरु - सूर्य
(11/09/2027 - 29/06/2028)**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 01/07/2020 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 9 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 11/09/2027 को प्रारंभ होकर 29/06/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य आत्मा, पिता, कार्यक्षमता और स्वास्थ्य का कारक है।

इस अवधि में आपकी अध्यात्म और तंत्र-मंत्र में रुचि होगी। धन के खर्च में सूझ-बूझ का परिचय देंगे; कर्ज से बचेंगे। विदेश यात्रा या विदेश में निवास संभव है। कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी। विरोधियों और स्पर्धियों पर विजय होगी। आप में प्रशासनिक क्षमता उत्तम है। अदालत में विजय होगी। मामापक्ष के लोगों से लाभ होगा।

आपके जीवनसाथी धनी बनेंगे; उच्चपद प्राप्त करेंगे। आपके पिता अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। माता की अध्यात्म में रुचि होगी। आपके भाई-बहनों के लिए कार्यक्षेत्र में सफलता, उच्चपद, धनलाभ का संकेत है।

आपकी संतान के जीवन में कुछ परिवर्तन आ सकता है। अगर वे कार्यरत हैं तो तबादला हो सकता है; बोनस आदि से अप्रत्याशित लाभ हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो साझेदारों या अनुबंधों से लाभ होगा। परामर्शदाता धन कमाएंगे। व्यापारियों को कर्मचारियों से लाभ होगा।

स्वास्थ्य, विशेषकर नेत्रों और पैरों का ध्यान रखें। अरिष्ट से बचाव के लिए सूर्य गायत्री मंत्र का जाप करें।

**अंतर्दशा :- गुरु - चन्द्र
(29/06/2028 - 29/10/2029)**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 01/07/2020 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा चंद्रमा की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 4 मास है। आपके लिए यह 29/06/2028 को आरंभ होकर 29/10/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र सुंदरता, स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य और भावनाओं का कारक है।

इस अवधि में आपके परिवार में हंसी-खुशी का वातावरण रहेगा। माता से संबंध उत्तम रहेंगे। शिक्षा उत्तम होगी और परीक्षा में सफलता मिलेगी। अचल संपत्ति, भूमि आदि से लाभ हो सकता है। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। परिवार से संबंध भावनापूर्ण रहेंगे। कार्यों के लिए प्रशंसा होगी। सब सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। समाज की भलाई का कार्य करेंगे। प्रसिद्धि मिलेगी। आपके जीवनसाथी सफल, प्रसिद्ध और धनी होंगे। आपके पिता को अप्रत्याशित धन मिल सकता है; वसीयत से लाभ हो सकता है। माता के पास सुख-साधन होंगे, प्रसन्न रहेंगी, धनी बनेंगी, बहुत से मित्र होंगे। आपके भाई-बहनों के लिए धन, सुख-साधन, उत्तम शिक्षा, मृदु वाणी के कारण प्रशंसा का संकेत है।

आपकी संतान का मन भटक सकता है; अच्छा होगा अगर वे कार्य में ज्यादा परिवर्तन न करें, कृतसंकल्प रहें। अगर वे कार्यरत हैं तो खर्चे बढ़ेंगे, बाधाएं आ सकती हैं। विदेश यात्रा हो सकती है।

अगर आप सेवारत हैं तो लाभ में वृद्धि होगी, सहकर्मि सहयोग करेंगे, कार्यालय उत्तम होगा। परामर्शदाताओं को साझेदारी से लाभ होगा, यात्रा हो सकती है, सफल रहेंगे। व्यापारी भाग्यशाली रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मनोभावनाओं में उतार-चढ़ाव से बचें। शुभत्व में वृद्धि के लिए दूध का दान करें।

**अंतर्दशा :- गुरु - मंगल
(29/10/2029 - 05/10/2030)**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 01/07/2020 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में आठवीं अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 29/10/2029 को प्रारंभ होकर वद 05/10/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, शौर्य और आत्मविश्वास का कारक है।

इस अवधि में आपकी आकांक्षाएं प्रबल होंगी जिन्हें आप साकार कर सकेंगे। पिता से संबंध उत्तम होंगे। लंबी दूरी की यात्राएं हो सकती हैं। अध्यात्म और दर्शन में रुचि ले सकते हैं। अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं या उससे आय बढ़ेगी; वाहन सुख उत्तम होगा। शिक्षा में सफलता मिलेगी। माता से संबंध मधुर होंगे। सब कार्य वांछित ढंग से पूर्ण होंगे।

आपके जीवनसाथी की कार्यक्षमता में वृद्धि होगी। पिता सफल ओर आत्मविश्वास से पूर्ण होंगे। माता को स्पर्धियों पर विजय मिलेगी; स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके भाई-बहनों के लिए सफलता, धनलाभ, प्रभावशाली मित्रों का संकेत है।

आपकी संतान को शिक्षा में सफलता मिलेगी; विवेकशक्ति उत्तम होगी, विभिन्न गतिविधियों में भाग ले सकते हैं। अगर वे कार्यरत हैं तो निवेश से लाभ होगा, उच्चपद मिल सकता है, खुश रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो पहले किये निवेश से लाभ होगा। उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं की यात्राएं हो सकती हैं, खर्च बढ़ेंगे। व्यापारियों को स्पर्धियों पर सफलता मिलेगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। गठिया आदि की मामूली शिकायत हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए मंगल के मंत्र का जाप करें।

ॐ अं अंगारकाय नमः

**अंतर्दशा :- गुरु - राहु
(05/10/2030 - 28/02/2033)**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 01/07/2020 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में नवीं अंतर्दशा राहु की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 4 मास 24 दिन है। यह 05/10/2030 को प्रारंभ होकर 28/02/2033 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक सुख, अचानक परिवर्तन और विदेशियों का कारक है।

इस अवधि में आपके खर्च बढ़ सकते हैं; धनसंचय में बाधा आ सकती है। प्रगति में निराशा हो सकती है। नये मित्र बन सकते हैं। विदेश की यात्रा या वहां पर निवास संभव है। अध्यात्म में रुचि हो सकती है। मुकदमे में जीत हो सकती है। कार्यालय सुविधासंपन्न होगा। किरायेदार सहायता करेंगे। पालतू जानवरों से खुशी मिल सकती है। स्वास्थ्य और कार्यक्षमता

उत्तम होने के कारण सब बाधाओं को पार कर लेंगे।

आपके जीवनसाथी का कार्यालय उत्तम होगा। आपके पिता को अचल संपत्ति प्राप्त हो सकती है; घरेलू जीवन सुखी रहेगा। माता भाग्यशाली और धनी बनेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए कार्यक्षेत्र में सफलता और सौभाग्य का संकेत है।

आपकी संतान के जीवन में कुछ परिवर्तन या अप्रत्याशित घटना घट सकती है। अगर वे कार्यरत हैं तो अचानक लाभ या परिवर्तन हो सकता है, वसीयत और उपहार से धनागम हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो मिलजुल कर कार्य करने से लाभ होगा। परामर्शदाता उत्साह से पूर्ण और व्यस्त रहेंगे। व्यापारियों के कार्य में विस्तार होगा, कर्ज से मुक्ति मिलेगी।

स्वास्थ्य का ध्यान रखें। मामूली बीमारियों को अनदेखा न करें। अरिष्ट से बचाव के लिए राहु मंत्र का जाप करें।

ॐ रां राहवे नमः

